SSLC Hin. Model Exam. Feb. 2018 Ans.

1. सही प्रस्ताव – वे वर्षा में गीली ज़मीन पर बीरबहूटियाँ खोजते थे।

2. साहिल के साथ।

3. **पटकथाः**

दृश्यः

स्थानः खेत समयः सुबह नौ बजे

आकाश में कुछ बादल छाए हैं।

पात्रः 1. एक लड़का, आयु 10–11, स्कूली यूनिफार्म में है, पीठ पर बस्ता है।

2. एक लड़का, आयु 10–11, स्कूली यूनिफार्म में है, पीठ पर बस्ता है।

संवादः

साहिलः बेला देखो इस बीरबहूटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है। तुमने कुछ सुना बेला?

बेलाः हाँ, सुना है। पहली घंटी लग गई है।

साहिलः लेकिन मुझे पैन में स्याही भरवानी है, दुकान से।

बेलाः तो चलो, दुकान जाएँ।

साहिसः ठीक है। चलें।

(दोनों उत्साह से दुकान की ओर जाते हैं)

बेला–साहिल बातचीतः

साहिलः तुमने कुछ सुना बेला?

बेलाः हाँ सुना है। पहली घंटी लग गई है।

साहिलः लेकिन मुझे पैन में स्याही भरवानी है दुकान से।

बेलाः तो जल्दी चलें, नहीं तो देर हो जाएगी।

साहिलः ठीक है। जल्दी चलें।

(दोनों दुकान की ओर चलते हैं। इसके बीच में साहिल कलम में बची स्याही ज़मीन पर छिड़क देता है)

बेलाः यह तुम क्या कर रहे हो साहिल?

साहिलः कुछ नहीं बेला, मैं कलम में बची स्याही छिड़क रहा हूँ।

बेलाः क्यों साहिल?

साहिलः अभी तो नई स्याही भरवाएँगे न।

बेलाः नहीं मिली तो?

साहिलः तुम चिंता मत करो। ज़रूर मिलेगी।

4. दर्शकों नें देर तक खड़े होकर तालियाँ बजाईं। कई लोगों ने माँ से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की।

5. **चार्ली की माँ की डायरी।**

तारीखः.....

आज मेरी जिंदगी में एक विचित्र घटना हुई। जब मैं स्टेज पर गाना गा रही थी तब मेरी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई। पहले दर्शक लोग सोच रहे थे कि माइक खराब है। लेकिन जब उन्हें पता चला कि मैं गा नहीं पा रही हूँ वे म्याऊँ–म्याऊँ करने लगे, हल्ला मचाने लगे। हे भगवान! मैं बहुत डर गई थी। मेरे सामने कोई उपाय नहीं था। मैं ने स्टेज छोड़ दिया। मैनेजर ने मेरे बेटे को मज़बूर करके स्टेज पर भेजा। क्योंकि उन्होंने चार्ली को गीत गाते हुए, अभिनय करते हुए और किसी का नकल उतारते हुए देखा था। चार्ली गीत गाना शुरू किया। पहले उसका गाना आर्कस्ट्रा के साथ नहीं चल रहा था। लेकिन जल्दी ही ठीक हो गया। उसने गीत गाकर, अभिनय करके और नकल उतारकर दर्शकों को बहुत खुश किया। नकल उतारते समय मेरी फटी आवाज़ को भी उसने नहीं छोड़ा था। स्टेज पर पैसों की बौछार हुई। उस प्रकार मैं अपमान से बच गई। सभी लोग मेरे पास आकर बेटे की तारीफ करने लगे। आज का दिन मेरे लिए एक विशेष दिन था।

6. दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद।

7. 'अकाल और उसके बाद' कविता में कवि नागार्जुन अकाल दूर होने पर घर के वातावरण का चित्रण कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि कई दिनों के बाद घर में दाने आए हैं। इससे चूल्हा जलने लगा, आँगन से धुआँ ऊपर उठने लगा और घर में रहनेवाले सभी जीवों की आँखें चमकने लगीं। क्योंकि

आज उनको खाना मिलनेवाला है।

8. ताऊजी बोले। गुठली **बोली**।

9. कार्ड में **गुठली का** नाम नहीं है।

10. **पिताजी के नाम गुठली का पत्र**

स्थानः .....,

तारीखः .....।

पूज्य पिताजी,

आप कैसे हैं। आपका व्यापार कैसे चल रहा है। घर में सब ठीक हैं।

कल हमारे घर में दीदी की शादी का कार्ड छपाके लाया गया था। लेकिन मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें मेरा नाम नहीं था। मैंने ताऊजी के पास जाकर शिकायत की। लेकिन ताऊजी बता रहे थे कि घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते, तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा। मुझे बड़ा दुख हुआ पापा। क्योंकि भैया के छोटे बच्चे का भी नाम छपा था जो अभी बोलने भी नहीं लगा है। घर में लड़के–लड़कियों में ऐसा भेदभाव क्यों हो रहा है। इस व्यवहार से मैं बहुत चिंतित हूँ पापा।

आपकी आज्ञाकारी बेटी,

(हस्ताक्षर)

गुठली।

सेवा में

श्री. नारायण बाबु. के.

.....

.....।

शिकायत करनाः പരാതിപ്പെടുക चिंतितः ദുഖിത आज्ञाकारीः അനുസരണയുള്ള

लड़कियों को समानता का अधिकार है – टिप्पणी

समाज में लड़के–लड़कियों को समानता का अधिकार भारतीय संविधान में बताया गया है।

उसके अनुसार लड़कियों के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं होना चाहिए। दोनों को समानता का अधिकार मिलना चाहिए। हमारा देश स्वतंत्र होकर 70 साल होते समय भी परिवार में हो या समाज में लड़कियों को समानता का अधिकार नहीं मिल रहा है। केरल में यह भेदभाव अन्य राज्यों की तुलना में कम है। लेकिन पूरे देश में यह बिलकुल भिन्न है। गर्भ में ही लड़कियों की हत्या होने का निर्मम व्यवहार भी कभी–कभी चलता है। याने वे लड़कियों का जन्म भी नहीं चाहते। लड़कियों के प्रति हीन भाव रखना ठीक नहीं है। लड़कियों को समाज में सभी प्रकार के क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। निर्ममः നിഷ്ഠുരമായ ഹീന ഭാവഃ നീചഭാവം

11. सिर्फ टे बदनसीब नहीं भर सकते। **वे नीची जाति के हैं**।

12. **जाति प्रथा एक अभिशाप हैः संगोष्ठी – पोस्टर**

सरकारी हायर सेकंडरी स्कूल कडन्नप्पल्लि

निराला हिंदी मंच

जाति प्रथा एक अभिशाप है – संगोष्ठी

16–02–2018 शुक्रवार सुबह 10 बजे

स्कूल ऑडिटोरियम में

उद्घाटनः **डॉ. एम. अरविंदन** (सेवानिवृत्त प्रोफेसर)

संगोष्ठी में विभिन्न विद्वान आलेख प्रस्तुत करते हैं।

सबका स्वागत है

संयोजक प्रधानाध्यापक

सेवानिवृत्तः വിരമിച്ച, आलेखः പ്രബന്ധം, संयोजकः കൺവീനർ

समान अवसर का अधिकार – लघु लेख

समाज में लोगों को जन्म के आधार पर विभाजित करना और उच्च या निम्न बताना ठीक नहीं है। हमारे देश का संविधान सभी जातिवालों को समानता का अधिकार निश्चित किया है। लेकिन सभी जातिवालों को आज भी हमारे देश में समानता का अधिकार प्राप्त नहीं है। आदमी जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। याने जातीय असमानता हमारे देश की सबसे बड़ी समस्याओं में एक है। स्वतंत्रता के 70 साल बीत जाते समय भी जाति के नाम पर लोगों पर अत्याचार चल रहा है।

आधुनिक विकसित समाज में जातीयता के नाम पर लोगों को अलग करना घोर अन्याय मान सकते हैं। सभी लोगों को खाना मिलने, घर मिलने, पीने का पानी मिलने, कपड़ा मिलने आदि तरह– तरह के अधिकार होने चाहिए। संविधानः ഭരണഘടന अधिकारः അവകാശം

13. सरसों के फूलों का रंग **पीला** है।

14. वाक्य पिरमिड

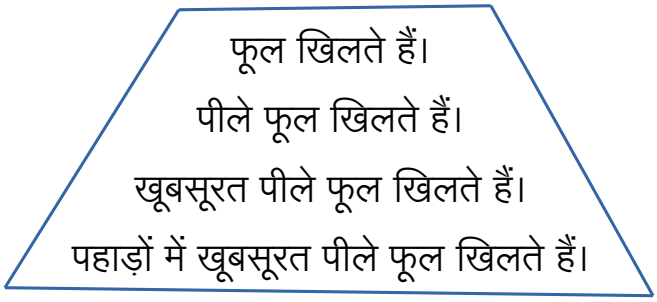

15. प्रतिदिन का समानार्थी शब्द **रोज़** है।

गरीब लड़का रामू	चौथी में पढ़ता है।
सुबह होते ही	रामू मछली पकड़ने जाता है।
छोटे रामू को	मछली पसंद है।
मछली बेचकर मिलनेवाले पैसे से	रामू किताब खरीदता है।

17. राजस्थान में सदियों से **ऊँटों को** सजाने का चलन है।

18. ऊँट राजस्थान की संस्कृति का अंग है – टिप्पणी।

ऊँटों को हम अधिकतर कुरूप या असुंदर जानवर मानते हैं। हम कभी भी ऊँटों को सुंदरता का प्रतीक नहीं मानते हैं। उनका वर्णन करते समय कहते हैं– नशेड़ियों की तरह मदहोश आँखें, ऊबड़–खाबड़ कुदाल जैसे दाँत, लटके हुए होंठ उलटकर चबाते रहते हैं और हिंडोला खाते हुए चलता है। लेकिन राजस्थान के लोगों के लिए ये सबसे प्रिय जानवरों में एक है। ऊँटों को रेगिस्थान का जहाज़ कहते हैं। याने रेगिस्थान में यात्रा करने में ऊँट बहुत सहायक होता है। राजस्थान रेगिस्थान का राज्य होने के कारण वहाँ ऊँटों की बड़ी मान्यता होती है। वे अपने इस प्रिय जानवर को सुंदर–सुंदर झालर, गहने आदि से सजाते हैं। क्योंकि ऊँट राजस्थान की संस्कृति का हिस्सा है।

19. कवितांश के आधार पर **बड़े–बड़े महारथी का** पक्ष असत्य है।

20. यह हिंदी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की टूटा पहिया नामक कविता का अंश है। इस कविता के द्वारा कवि तुच्छ मानव के महत्व पर बल देते हैं। कविता में कहते हैं कि बड़े–बड़े महारथी अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी अकेली आवाज़ को कुचल देना चाहता है। वर्तमान समाज में भी एक आम आदमी को शासक उतना महत्व नहीं देता। लेकिन कवि याद दिलाना चाहते हैं कि समाज में तुच्छ माने जानेवाला आदमी का भी अपना महत्व है। जनतंत्र में भी एक आदमी (मतदाता) शासन का निर्णय तक कर सकता है। तुच्छः നിസ്സാരമായ शासकः ഭരണാധികാരി याद दिलानाः ഓർമ്മിപ്പിക്കുക जनतंत्रः ജനാധിപത്യം मतदाताः വോട്ടർ शासनः ഭരണം

ravi. m., ghss, kadannappally, kannur, 670504. 9446427497.